Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, FEB-MAR, 2023, VOL-11/56

भारत में शैक्षिक जागरूकता एवं महिला आत्म–निर्भरता (वर्तमान परिदृश्य)

सत्येन्द्र सिंह **, Ph.D.**

असि0 प्रो0, शिक्षाशास्त्र, पं0 लो0 श0 स्व0 सं0 से0 राजकीय महाविद्यालय, मॉट, मथुरा

Paper Received On: 18 MAR 2023
Peer Reviewed On: 31 MAR 2023
Published On: 1 APRIL 2023

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

''महिला आत्म–निर्भरता'' की प्रक्रिया आज नगरों में ही नहीं, अपितु भारतीय परम्परागत ग्रामीण समुदायों में भी क्रियाशील है। शिक्षा के क्षेत्र में ही बाल शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा और स्त्री–शिक्षा पर विशेष बल दिया जा रहा है। पुरानी परम्पराओं व कुरीतियाँ त्यागने के लिए आवश्यक वातावरण को भी उत्पन्न करने का प्रयास किया जा रहा है। विवाह और सम्पत्ति के हस्तान्तरण के मामलों में न्यायिक सुधार एवं महिलाओं के शिक्षित होने से परिवारों के पारम्परिक ढाँचे का आधार प्रभावित हुआ है। उसने परिवार में समानता के सिद्धान्त को लागू किया है। जिससे महिलाओं की सामाजिक– आर्थिक प्रस्थिति तभा भूमिकाएं सुधरी हैं। इसी प्रकार जातियों की भी परम्परात्मक–भूमिका में काफी बदलाव आया है। दलितों में नई चेतना जागी है। राजनीति में जातियों की बढ़ती भागीदारी; भारतीय समाज में बढ़ते आधुनिकीकरण का परिणाम है। आधुनिक समाज में सबको समानता का अधिकार प्राप्त है। साथ ही, भूमि–सुधारों के परिणामस्वरूप कृषि सम्बन्धी सामाजिक संरचना में भी संरचनात्मक सुधार हुआ है।

यदि महिलाओं के परिप्रेक्ष्य में विचार किया जाय तो मुगल साम्राज्य काल से ही भारतीय नारी की दशाओं तथा सामाजिक स्थिति में काफी गिरावट आई[3], यथा पर्दाप्रथा, स्त्री शिक्षा की उपेक्षा, बाल विवाह प्रथा, विधवा विवाह पर रोक, उत्तराधिकार का न होना, सम्पत्ति पर अधिकार न होना आदि ऐसी अनेक सामाजिक रूढ़ियाँ, भारतीय नारी की गिरती दशाओं हेतु विशेषतः उत्तरदायी रहीं हैं।[4] 18वीं शताब्दी से लेकर 20वीं शताब्दी के आरम्भ तक का समय महिलाओं के सामाजिक पतन का समय माना जा सकता है। इस दिशा में अंग्रेजों ने भी कोई सार्थक प्रयास नहीं किए, जिसके फलस्वरूप समाज सुधार हेतु ब्रह्म समाज, आर्य समाज आदि आन्दोलन अवश्य हुए, जिनके प्रभाव से भारत में महिलाओं के सुधार सम्बन्धी विकास की प्रक्रिया का शुभारम्भ हुआ। आधुनिक परिवेश के

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

सृजन में परिवर्तनकारी अनेक प्रक्रियायें अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। साक्षरता तथा शिक्षा का वितरण उनमें से एक है।[5]

भारत को आन्तरिक मामला समझकर अंग्रेजों ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। भारत के स्वतंत्र होने के बाद भी भारत की लोकप्रिय सरकारों ने भी लगभग 10 वर्षों तक इस ओर कोई विशेष रूचि नहीं दिखाई, परन्तु जहाँ 49 प्रतिशत महिलाएं जो मतदाता थीं, के मतों की आवश्यकता सरकार बनाने के लिये महसूस की गई तब विशिष्ट सामाजिक विधान, अधिनियम रूप में पारित किए गए यथा विशेष विवाह अधिनियम 1954, हिन्दू विवाह अधिनियम 1955, हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम 1956, सम्पत्ति अधिकार अधिनियम 1956, दत्तक पुत्र अधिनियम 1956 आदि। सरकार ने कानून अवश्य बनाए जिससे कम से कम कानूनी तौर पर तो महिलाओं को कुछ अधिकार अवश्य प्राप्त हो गए, लेकिन मूल्यों से बंधी हुई परम्पराओं के दायरे में कैद अशिक्षित महिलायें विशेषतः ग्रामीण महिलायें इसका विशेष लाभ प्राप्त नहीं कर सकी हैं।[9] स्पष्टतः स्वतंत्रता के पूर्व से ही स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन प्रदान नहीं किया गया तथा उसका प्रभाव स्वतंत्रता के पश्चात् भी बना रहा। 'पिछले दो दशकों से शिक्षा का स्तर तथा प्रभाव क्षेत्र अवश्य बढ़ा तथा स्त्रियों ने भी इस दिशा में विशेष रूचि ली है।

प्रस्तुत अध्ययन उ0 प्र0 के जनपद मथुरा के 300 निदर्शितों के साक्षात्कार से प्राप्त प्राथमिक तथ्यों पर आधारित है। सभी 300 न्यादर्शों (150 पुरूष एवं 150 महिलायें) से ''महिला आत्म–निर्भरता'' के सूचकों के प्रति भी जानकारी प्राप्त की है। सर्वेक्षण अध्ययन से प्राप्त प्राथमिक जानकारी पर निम्न तालिकायें न्यादर्शों के अभिमत दर्शाती है–

तालिका 1 : शैक्षिक जागरूकता से ''महिला आत्म–निर्भरता'' के प्रभावों के प्रति दृष्टिकोण

क्रम	महिलओं पर शिक्षित होने के प्रभाव	न्यादर्शों के अभिमत (संख्या/प्रतिशत)				
		हाँ	नहीं	उदासीन	अनुत्तरित	योग
1	महिलाओं को समानता का अधिकार प्राप्त हुआ है	273 (91.00)	–– (00.00)	27 (09.00)	–– (00.00)	300 (100.00)
2	महिलाओं की स्थिति सुधरी है	300 (100.00)	–– (00.00)	–– (00.00)	–– (00.00)	300 (100.00)
3	जातियों की परम्पागत भूमिकाओं में बदलाव आया है	291 (97.00)	03 (01.00)	06 (02.00)	–– (00.00)	300 (100.00)
4	भौतिकवादिता/विलासिता बढ़ी है	300 (100.00)	–– (00.00)	–– (00.00)	–– (00.00)	300 (100.00)
5	व्यक्तिवादिता में वृद्धि हुई है।	249 (83.0)	09 (03.00)	39 (13.00)	03 (01.00)	300 (100.00)
6	टी.वी. चैनलों पर नग्नता व अश्लीलता परोसने से नयी संस्कृति विकसित हुई है	270 (90.00)	–– (00.00)	30 (10.00)	–– (00.00)	300 (100.00)
7	संयुक्त परिवार टूट रहे हैं	240 (80.00)	–– (00.00)	54 (18.00)	06 (02.00)	300 (100.00)
8	वृद्धों के प्रति उपेक्षा की भावना में वृद्धि हुई है ।	264 (88.00)	12 (04.00)	24 (08.00)	–– (00.00)	300 (100.00)
9	नैतिकता का पतन प्रायः देखने में आ रहा है	219 (73.00)	–– (00.00)	72 (24.00)	09 (03.00)	300 (100.00)
10	सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि हुई है	270 (90.00)	–– (00.00)	27 (09.00)	03 (01.00)	300 (100.00)
11	रहन–सहन स्तर में तुलनात्मक वृद्धि हुई है।	210 (70.00)	57 (19.00)	33 (11.00)	–– (00.00)	300 (100.00)

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

तालिका 2 :शैक्षिक जागरूकता से ''महिला आत्म–निर्भरता'' की प्रक्रिया के सूचकों के प्रति न्यादर्शों के प्रत्युत्तर

क्रम	सूचक	न्यादर्शों की आवृत्तिँ/प्रतिशत				समस्त योग
		हाँ	नहीं	तटस्थ	अनुत्तरित	(प्रतिशतता)
1	विवेकपूर्ण दृष्टिकोण (रेशनलिज्म)	120 (40.00)	60 (20.00)	60 (20.00)	60 (20.00)	300 (100.00)
2	गतिशीलता (मॉबिलिटी)	240 (80.00)	–– (00.00)	60 (20.00)	–– (00.00)	300 (100.00)
3	शिक्षा एवं साक्षरता (लिटरेसी) में वृद्धि	252 (84.00)	–– (00.00)	48 (16.00)	–– (00.00)	300 (100.00)
4	संचार सहभागिता	228 (76.00)	–– (00.00)	60 (20.00)	12 (04.00)	300 (100.00)
5	उपलब्धि उन्मेष	192 (64.00)	12 (04.00)	96 (32.00)	–– (00.00)	300 (100.00)
6	स्व–आस्था व स्व–परिपूर्णता	180 (60.00)	12 (04.00)	96 (32.00)	12 (04.00)	300 (100.00)
7	राजनीतिक सहभागिता	240 (80.00)	–– (00.00)	60 (20.00)	–– (00.00)	300 (100.00)
8	विकासोन्मुख दृष्टिकोण	240 (80.00)	–– (00.00)	60 (20.00)	–– (00.00)	300 (100.00)
9	दृष्टिकोण/मनोवृत्तियों में परिवर्तन	270 (90.00)	24 (08.00)	06 (02.00)	–– (00.00)	300 (100.00)
10	इन्टरेस्ट आर्टिकुलेशन	180 (60.00)	24 (08.00)	96 (32.00)	–– (00.00)	300 (100.00)
11	जीवन के प्रति नवीन प्रतिमान विकसित होना	192 (64.00)	24 (08.00)	84 (28.00)	–– (00.00)	300 (100.00)
12	सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन	228 (76.00)	48 (16.00)	24 (08.00)	–– (00.00)	300 (100.00)
13	विश्वासों तथा संस्कारों में परिवर्तन	240 (80.00)	–– (00.00)	60 (20.00)	–– (00.00)	300 (100.00)

(नोट– कोष्ठकों के अन्तर्गत प्रदर्शित आँकड़े प्रतिशतता प्रदर्शित करते हैं)

प्रसंगाधीन प्रस्तुत तालिका (2) आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के सूचकों की जानकारी; अध्ययनार्थ चयनित सभी 300 न्यादर्शों के अभिमतों के अनुसार प्रदर्शित करती है–

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

(1) विवेकपूर्ण दृष्टिकोण (रेशनलिज्म) सूचक की जानकारी के सन्दर्भ में 120(40 प्रतिशत) न्यादर्शों ने हाँ, 60(20 प्रतिशत) न्यादर्शों ने नहीं, 60(20 प्रतिशत) न्यादर्शों ने तटस्थ अभिमत प्रकट किए हैं तथा 60(20 प्रतिशत) न्यादर्श अनुत्तरित रहे हैं।

(2) गतिशीलता (मॉबिलिटी) सूचक के प्रति जानकारी के सम्बन्ध में 240(80 प्रतिशत) न्यादर्शों ने हाँ, और 60(20 प्रतिशत) न्यादर्शों ने तटस्थ उत्तर दिए है जबकि कोई भी न्यादर्श न तो अनुत्तरित रहा; और न किसी ने ''नहीं'' में उत्तर प्रदान किया है।

(3) शिक्षा व साक्षरता (एजुकेशन व लिटरेसी) में वृद्धि सूचकों के प्रति जानकारी के सम्बन्ध में 252(84 प्रतिशत) न्यादर्शों ने हाँ, 48(16 प्रतिशत) न्यादर्शों ने तटस्थ अभिमत प्रकट किए हैं तथा कोई भी न्यादर्श इस प्रश्न पर अनुत्तरित नहीं रहा है।

(4) संचार सम्बद्धता/सहभागिता सूचक के प्रति जानकारी के सम्बन्ध में 228(76 प्रतिशत) न्यादर्शों ने हाँ, 60(20 प्रतिशत) न्यादर्शों ने तटस्थ अभिमत दर्शाए हैं जबकि 12(4 प्रतिशत) न्यादर्श अनुत्तरित रहे हैं।

(5) उपलब्धि–उन्मेष (ऐचीवमेन्ट ओरियेन्टेशन) सूचक के प्रति जानकारी के बारे में 192(64 प्रतिशत) न्यादर्शों ने हाँ, 12(4 प्रतिशत) न्यादर्शों ने नहीं, 96(32 प्रतिशत) न्यादर्शों ने तटस्थ दृष्टिकोण दर्शाए हैं जबकि एक भी न्यादर्श इस प्रश्न पर अनुत्तरित नहीं रहा है।

(6) स्व–आस्था (सैल्फ रिलाइन्स) व स्व–परिपूर्णता (सैल्फ सफीसियेन्सी) सूचक की जानकारी के सम्बन्ध में 180(60 प्रतिशत) न्यादर्शों ने हाँ, 12(4 प्रतिशत) न्यादर्शों ने नहीं, 96(32 प्रतिशत) न्यादर्शों ने तटस्थ दृष्टिकोण

(7) राजनैतिक सहभागिता /विकासोन्मुख दृष्टिकोण सूचक के बारे में 240(80 प्रतिशत) न्यादर्शों ने हाँ, तथा 60(20 प्रतिशत) न्यादर्शों ने तटस्थ अभिमत प्रकट किए हैं।

(8) दृष्टिकोण/मनोवृत्तियों में परिवर्तन सूचक की जानी के सम्बन्ध में 270(90 प्रतिशत) न्यादर्शों ने हाँ, 24(8 प्रतिशत) न्यादर्शों ने नहीं, तथा 6(2 प्रतिशत) न्यादर्शों ने तटस्थ अभिमत प्रकट किए हैं।

(9) रूचि सन्धियोजन (इण्टरेस्ट आर्टिकुलेशन) सूचक की जानकारी के सम्बन्ध में 180(60 प्रतिशत) न्यादर्शों ने हाँ, 24(8 प्रतिशत) न्यादर्शों ने नहीं, 96(32 प्रतिशत) न्यादर्शों ने तटस्थ अभिमत प्रकट किए हैं।

(10) जीवन के प्रति नवीन प्रतिमान विकसित होना सूचक की जानकारी के सम्बन्ध में 192(64 प्रतिशत) न्यादर्शों ने हाँ, 24(8 प्रतिशत) न्यादर्शों ने नहीं, 84(28 प्रतिशत) न्यादर्शों ने तटस्थ दृष्टिकोण दर्शाए हैं, इस प्रश्न पर कोई भी सूचनादाता अनुत्तरित नहीं पाया गया।

(11) सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन, सूचक की जानकारी के सम्बन्ध में 228(76 प्रतिशत) न्यादर्शों ने हाँ, 48(16 प्रतिशत) न्यादर्शों ने नहीं, 24(8 प्रतिशत) न्यादर्शों ने तटस्थ अभिमत प्रकट किए हैं; कोई भी उत्तरदाता अनुत्तरित नहीं पाया गया है।

(12) विश्वासों तथा संस्कारों में परिवर्तन, सूचक की जानकारी के सम्बन्ध में 240(80 प्रतिशत) न्यादर्शों ने हाँ, 60(20 प्रतिशत) न्यादर्शों ने तटस्थ दृष्टिकोण प्रदर्शित किए तथा कोई भी न्यादर्श अनुत्तरित नहीं रहा है।

निष्कर्षः प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से प्राप्त प्रमुख निष्कर्ष निम्नवत् हैं–

1. महिलाओं को समानता का अधिकार प्राप्त हुआ है।
2. भौतिकवादिता/विलासिता एवं व्यक्तिवादिता बढ़ी है।
3. वर्तमान संचार साधनों के कारण, संयुक्त परिवार व्यवस्था का विघटन हुआ है, एवं नग्नता व अश्लीलता परोसने से नयी संस्कृति विकसित हुई है।
4. वृद्धजनों के प्रति उपेक्षा की भावना में वृद्धि हुई है ।
5. रहन–सहन स्तर एवं सामाजिक गतिशीलता में तुलनात्मक वृद्धि हुई है।

संदर्भः

वर्मा के0 पी0 (2006) ; विलेजेजः ए चेलेन्ज, योजना, अंक–20, संख्या– 22, पृ.56

त्रिपाठी सुरेन्द्र (2007) ; भारतीय समाज विज्ञान समीक्षा (विकास के साँस्कृतिक अवरोध) समाज विज्ञान विभाग, काशी विश्वविद्यालय वाराणसी, अंक–20–21, पृष्ठ 62

पाण्डेय डी0 के0 (2015) ; स्वतंत्र भारत में स्त्री शिक्षा का विकास : नीतियाँ तथा उपलब्धियाँः सोसल साइंटिस्ट, अक्टूबर, भाग–13, पृष्ठ 18–19

गुप्ता जे.के. (2015) ; दि ऐफलुऐन्ट सोसायटी, जार्ज एल्विन एण्ड अनविन लिमि. पब्लिशिंग कम्पनी, पृष्ठ 25–26

सक्सैना पी.एन. (2016) ; आधुनिक परिवेश में महिला शिक्षा : एक अध्ययन (प्रकाशित शोध प्रबन्ध) रिसर्च पब्लिकेशन्स जयपुर, राज., पृष्ठ 50

द्विवेदी जे0 पी0 (2016) ; स्वतंत्र भारत में स्त्री शिक्षा का विकास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी, पृष्ठ 146

भटनागर पी.के. (2009) ; आधुनिकीकरण तथा शिक्षाः एक परिदृश्य, पापुलर प्रकाशन बाम्बे, पृष्ठ 43

पाण्डेय बी.एल. (2005) ; 'मिनट्स ऑन एजूकेशन' ए हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, वाल्यूम–2, पृष्ठ 12

एन्डरसन सी (2005) ; दि मॉडर्नाइजेशन आफ एजूकेशन, दि न्यू एशिया पब्लिसिंग कम्पनी, न्यूयार्क (मेन्टर बुक्स), बाल्यूम–2, पृष्ठ 18

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

नाथ पनधारी (2010) ; हिन्दू समाज की व्यवस्था एवं महिला शिक्षा, पॉपुलर प्रकाशन (प्रा.लि.) पब्लिसर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, पृ. 241

फैडरिक एच. (2014) ; ऐजूकेशनः मेन पावर एण्ड इकोनामिक ग्रोथ, स्ट्रेटीज ऑफ ह्यूमन रिसोर्स डबलपमेन्ट, मैक ग्रो हिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क, पृष्ट 81

श्रीवास्तव ए.एल. (2017) ; जनसंख्या वृद्धि एवं सामाजिक आर्थिक विकास, प्रकाशित शोध–पत्र (भारतीय समाज विज्ञान समीक्षा) अंक–20, बी0एच0यू0 प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ 59